Deg-2
मध्यकाल-III

①

मोहम्मद तुगलक के अधीन राज्य नीतियों एवं प्रशासनिक सिद्धान्तों की नवीन स्थिति। (पहला दिन)

मोहम्मद तुगलक ने भी अलाउद्दीन खिलजी की भाँति ही शरियत के कानूनों को अनदेखा कर दिया। जब उसने पाया कि राजनीतिक धर्म पर आधारित न होकर कारणों पर आधारित होनी चाहिए तब उसने धर्म कानूनों का राजनैतिक एवं प्रशासनिक मामलों में हस्तक्षेप बन्द कर दिया। उसने महसूस किया कि राजनीतिक और प्रशासनिक कार्य धर्मनिरपेक्षता की नीति पर आधारित होने चाहिए। इस कारण उसका उलेमाओं से झगरा होना अवश्यम्भावी था। क्योंकि सम्पूर्ण सल्तनत काल में अलाउद्दीन खिलजी के शासनकाल को छोड़कर उनकी राजनीति में पूरी दखलदाजी थी और अब वे अपने अधिकारों से वंचित हो रहे थे। मोहम्मद तुगलक का उद्देश्य शरियत को चुनौती देना नहीं था। उसने कुछ महत्वपूर्ण विषयों पर धार्मिक नेताओं से विचार-विमर्श भी किया। लेकिन उनकी सलाह मानी तभी जब उसने पाया कि उनकी सलाह राजनीतिक दृष्टि से सही है। मोहम्मद तुगलक ने न्यायिक क्षेत्र से उलेमाओं के —

P.T.O

Scanned with CamScanner

वह उसे दिल्ली का सुल्तान स्वीकार करे। उसने सिक्कों पर से नाम हटा दिया और खलीफा का नाम लिखवाया।

उसने अपनी नीतियों में परिवर्तन इसलिए किया क्योंकि तत्कालीन मुस्लिम विद्वानों ने मुस्लिम कट्टरवाद और हिन्दुओं के शोषण की प्रशंसा की थी और वह इस भ्रम में रहा कि उसे अपनी नीति परिवर्तित करने से प्रशंसा मिलेगी, पर ऐसा नहीं हुआ।

उसने अपने शासन के प्रारंभिक दिनों में जिन राजनीतिक सिद्धान्तों का बदलने की चेष्टा की थी वह उन्हें न बदल सका और हर कर उन्हीं सिद्धान्तों को उसने अपना लिया। मोहम्मद तुगलक अपना कोई निर्णय न ले सका और सदैव असमंजस में पड़ा रहा।